सविता दास सवि की पाँच कविताएं

(1)
पगडंडी

इन पगडंडियों के किनारे
बसता है सीधा-सादा गाँव
लहलहाते हरे-भरे खेत,
किसानों के सपने
और
उनके घर वालों की उम्मीद...

सहज सी आशाएं
हर प्रहर पूरी करने की ललक
बहुत दूर का सपना
नहीं देखता गाँव
फिर ये पगडंडी जुड़ जाती है
मिट्टी की सड़क से
और सड़क जुड़ जाती है
शहर के राजमार्ग से
सपने उड़ने लगते हैं
विलासिता के आसमान में
कहीं उदास रह जाती है,
सुनसान पगडंडी, निश्छल सपने
और ये सीधा-सादा सा गाँव।

(2)
उत्सवों का स्वागत

जीवन के अद्भुत आश्चर्यों से रोमांचित
हम सब
मुरझाते फूलों को देख

उदास नहीं होते
आशाएं
किसी पंछी के हल्के
पंख सी उड़ती
किसी नाज़ुक तितली सी
धूप में मगन क्यारियों में
गश्त लगाती रहती
आकांक्षाओं को भी
हर दम
सींचता है मन।

लोगों की उपेक्षाओं को
खाद बनाकर
मन की उदासी बारिश के
बुलबुलों सी क्षण में
अस्तित्व खो देती
आंधी, तूफानों के बाद भी
शरद ऋतु में खिल जाता है मन
जानता है
कांस के फूल फिर खिलेंगे
वह सजता और सजाता है
अपने इर्द-गिर्द की दुनिया को
फिर से उत्सवों का स्वागत
करने के लिए।

(3)
इंतज़ार किया जा सकता है

रात का गहन अंधकार
अवसादों को और उकसाता है
थोड़ी उपेक्षा करना ज़रूरी है
ऐसे में
पीड़ाओं को
हताशाओं को
यह सोचकर कि
आगे सिर्फ रोशनी
का मंजर है

इंतज़ार सुबह का किया

जा सकता है
प्रेम में ख़ुद को भुलाकर
किसी की हथेली में
अपनी हथेली को सौंपकर
आंखों में
उम्मीद की आस लेकर
रोशनी का इंतज़ार
किया जा सकता है।

(4)

कुछ नहीं

तुम्हारे जीवन में
कुछ नहीं
बनकर रहना
अच्छा लगता है

जैसे सवाल और जवाब
के बीच का कुछ नहीं
जैसे कोरे कागज़ और
उसमें लिखे जाने वाले
शब्दों के पहले का
कुछ नहीं।

(5)

अधिकार

अपने अधिकार में
लेना चाहती हूँ
पृथ्वी पर बची हुई
कुछ अनोखी चीजों को
जानती हूँ उसे ढूँढ़ना
उतना मुश्किल नहीं है

बस एक दिन उठना होगा
सूरज से पहले।

*(**लेखकीय परिचय:** सविता दास सवि असम की चर्चित कवयित्री हैं। हाल ही में उनके कविता संग्रह 'किनारे पर आकर' को साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद द्वारा पुरस्कृत किया गया है।)*